# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

## द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ९

फरवरी 2025

गुणांक - १००

## प्रश्न - पत्र

सूचना: १. नाम और इनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरूरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरूरी है।

**प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -** २०

१. भरतक्षेत्र मे गंगा और सिंधु नदियाँ लघु हिमवंत के उपर से ..... से निकलती है।
२. अविधि से करने के बदले सामायिक नहीं ही करना वो ज्यादा अच्छा ऐसा बोलना..... है।
३. जिस कर्म के उदय से जीव का शरीर अनुष्ण होने पर भी उष्ण प्रकाश देता है, उसे ..... कहते है।
४. उनके गुणों को सुनने वाली सभा भी मेरे उपर ..... करो
५. इन..... में प्रवेश सामायिक व्रत के द्वारा होता है।
६. ..... क्षेत्र में सीता और सितोदा नदियाँ मुख्य है।
७. ..... की साधना में लग मिले हुए मानवभव को सफल बनाने का पुरुषार्थ करे।
८. धर्मतत्व को जानने वाला श्रावक घर के सभी सदस्यों को एकत्रित कर ..... देता है।
९. आत्मा की ..... प्राप्त करने के लिये शुद्धि संभालना अत्यंत आवश्यक है।
१०. पर्याप्तियाँ पूर्ण करने के बाद ही मृत्यु को प्राप्त होते है, उन्हें..... जीव कहते है।
११. इन वेदपदो का विचार करके..... के अस्तित्व को स्वीकार कर।
१२. जिस कर्म के उदय से सर्व भोग सामग्री उपलब्ध होते हुए भी जीव भोग न सके वह..... कर्म है।
१३. अवंतीसुकुमाल आदि धर्मात्माओं को..... सुनने से जातिस्मरणज्ञान प्राप्त हुआ।
१४. पापसहित व्यापार के परिहार को..... कहा जाता है।
१५. खुद की आत्मा पर..... रखना अत्यन्त कठीन और दुष्कर है।
१६. रुप के सहारे से अपनी उपस्थिति दूसरे को दर्शाये वो चौथा ..... नामक अतिचार जानना।
१७. जिस कर्म के उदय से लोगों को मान्य वचन की प्राप्ति होती है वह..... है।
१८. संपत्ति विरासत में मिल सकती है, परंतु ज्ञान..... से प्राप्त किया जाता है।
१९. दिवार को पीठ टिकाकर बैठे वो ..... अतिचार जानना।
२०. जीव स्वयं से विकृत विचित्र शारीरिक अवयवों के कारण दुःखी होता है, वह..... नामकर्म है।

**प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -** १५

१. ब्राह्मण कुल का धन क्या है ?
२. अपनी आत्मा पर काबू पाना क्या है ?
३. अपनी शक्ति सामर्थ्य का उपयोग करने का मन न हो वह कौनसा कर्म है ?
४. साधुता की प्राप्ति हेतु की सीडी क्या है ?
५. सामायिक करते हुए मन में आर्तध्यान, रौद्रध्यान करे वह कौनसा अतिचार है ?
६. भरतक्षेत्र के उत्तर-दक्षिण दो विभाग कौन करता है ?
७. आलोचना लेने से क्या हलका होता है ?
८. श्रीअजितनाथ तथा शांतिनाथ भगवान किस के बल से महान है ?
९. वृद्धा श्राविका मृत्यु पाकर देवीरुप में कहां उत्पन्न हुई ?
१०. किस कर्म के उदय से आठ महाप्रातिहार्यादि अतिशयो की प्राप्ति होती है ?
११. शिष्य संतति की परम्परा किसकी आगे नहीं चली ?
१२. वासना-विकार की उत्तेजना को कौन शांत करती है ?
१३. क्या आये तो ही सामायिक की सच्ची सफलता समझना चाहिये ?
१४. क्रोधत्याग का उपदेश अपने पिता को कौनसे श्रावक ने दिया ?
१५. श्रावक जीवन किसे शोभायमान है ?

**प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -** १०

१) पत्तेअं २) नईओ ३) जई ४) जयवर ५) सहस्स ६) दुहुच्च ७) वाणवासिआ ८) सीओया ९) जमुसिण १०) निअ
११) अविसायं १२) सव्वनुणा १३) वरकिया १४) सिराइ १५) सलिला १६) तित्थेण १७) दायया १८) सुहसुणी
१९) विदुहा २०) मोअेऊ

**प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -** १०

| A | B | A | B |
|---|---|---|---|
| १) सूत्रधार | १) शरीर सत्कार | ६) विज्ञानघन | ६) मंदरगिरि |
| २) अकरणनामा | २) परलोक | ७) सीता | ७) निर्माणनामकर्म |
| ३) अश्व | ३) केसरीद्रह | ८) आवकाश | ८) स्मृतिविहीन |
| ४) ढंढण मुनि | ४) अभ्यंतर तप | ९) अव्यापार | ९) लाभान्तराय |
| ५) कुघट | ५) गमनागमन | १०) स्वाध्याय | १०) नीच गोत्रकर्म |

**प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -** १०

१. नरकांता और नारीकांता नदियां कितनी नदियों के साथ लवण समुद्र में मिलती हैं ?
२. सामायिक यह कितने मीनिट का साधुपना है ?
३. एक उपवास के बराबर कितनी गाथाओं का स्वाध्याय शास्त्रकारो ने बताया है ?
४. अजित-शांति स्तव की बत्तीसवीं गाथा में कितने शुभ चिन्ह अंकित किये गये हैं ?
५. शय्या उपकरण सहित कितने हाथ लंबी होनी चाहिये ?
६. निर्माण नामकर्म का वर्णन कौनसे नंबर की गाथा में आया है ?
७. श्रीमेतार्यस्वामी ने किस उम्र में गृहस्थाश्रम का त्याग किया ?
८. नीच गोत्र कर्म के कितने भेद हैं ?
९. सीता और सीतोदा नदियां दोनों के मिलाकर कुल कितनी नदियों का परिवार है ?
१०. सिर्फ दिवस या सिर्फ रात्रि का पौषध कितने घंटे का होता है ?

**प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही ( ✓ ) हैं या गलत (×) बताओ -** १०

१. दूसरो पर कोई उपकार न किया हो फिर भी दूसरो को प्रिय लगे वह आदेय नाम कर्म है ।
२. विज्ञान घन इत्यादि वेदपदो का अर्थ गलत कर रहे थे मेतार्य पंडित ।
३. धर्मदास श्रावक को गृहस्थपने में ही केवलज्ञान प्राप्त हो गया था ।
४. अभ्यंतर क्षेत्र में महाविदेह क्षेत्र का समावेश होता है ।
५. शरीर की शुश्रुषा यानि शोभा करने का परिहार करना वो शरीर सत्कार पौषध है ।
६. भक्ति रहित होकर सामायिक करना यह काया का दोष है ?
७. जिस कर्म के उदय से जीव का उष्ण शरीर ठंडा प्रकाश करता है वो उद्योत नाम कर्म है ।
८. पूज्य अजितनाथ और शांतिनाथ भगवान ने तप से सर्व पापो को दुर किया है ।
९. जिस कर्म के उदय से परोपकार करने पर भी जीव अन्य को प्रिय लगता है, उसे दौर्भाग्य नामकर्म कहते है ।
१०. स्वाध्याय यह श्रुतसागर की भक्ति है ।

**प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -** १५

१. पर्याप्त नामकर्म के उदय से जीव अपनी-अपनी पर्याप्तियाँ परिपूर्ण करते है ।
२. ये दो नदियां भी वैताढ्य के साथ ऐरावत क्षेत्र को छः खंडो में विभाजित करती है ।
३. अनागत का चिंतन यानि अब बाद में मैं ये अमुक कार्य है वो इस तरह से करुंगा ।
४. असद मार्ग से आत्मा को वापिस लौटाती है ।
५. जिनके कर्मरुप रज तथा मल नाश हो गये है ।
६. जिस कर्म के उदय से अनंत जीवो के शरीर एकत्र हो तो भी आंखो से या यंत्र से भी देख न सके ।
७. वे सच्चे साधु अणगार बने एवं दसवें गणधर पद पर विराजमान हुए ।
८. ऐसे समय में हम प्रमाद करे यह योग्य नहीं माना जा सकता ।
९. शिक्षाव्रत लेने से सर्वविरति की ओर के भाव मजबूत बनते है ।
१०. इस काल में दीक्षा एवं सामायिक जो है वो अभ्यास मात्र है ।

**प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -** १५

१. तीर्थंकर नामकर्म के बारे में समझाइये ? २) पौषध व्रत के भेद समझाइये ? ३) सामायिक व्रत की महत्ता बतलाइये ?
४. स्वाध्याय किस तरह से करना चाहिये ? ५) देसावगासिक व्रत के अतिचार कौनसे है, किसी एक को समझाइये ?

**उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :**
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com